भारत –पाक सम्बन्ध में भारत की विदेश नीति की भूमिका

[1]डॉ. महेंद्र सिंह*, [2]सुनीता कुमारी

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, [2]शोधार्थी

राजनीतिक शास्त्र विभाग, नीलम विश्वविधालय, कैथल (हरियाणा)

Email ID: [1]munde.mahender@gmail.com, [2]sunitayadavgargi1980@gmail.com

Accepted: 07.02.2023 **Published**: 01.03.2023

मुख्य-शब्द :- भारत –पाक सम्बन्ध

शोध सारांश

अंतर्राष्टीय राजनीतिक स्तर पर किसी देश के साथ संबंधो के निर्माण में किसी भी देश की विदेश नीति महतवपूर्ण भूमिका निभाती है | विदेश नीति का इतिहास से गहरा सम्बन्ध होता है। भारत की विदेश नीति का सम्बन्ध इतिहास और स्वतन्त्रता आन्दोलन से है। विरासत के रूप में भारत की विदेश नीति उन सभी ऐतिहासिक तथ्यों को समेटे हुए है जिनका जन्म भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन से के कारण हुआ था। भारत का शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व व विश्वशान्ति का विचार हजारों वर्ष पुराने सोच और सिधान्तो का परिणाम है जिसको स्वामी विवेकानंद , महात्मा बुद्ध व महात्मा गांधी जैसे विचारकों ने अपना सहयोग प्रदान किया था। उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंगभेद की नीति का विरोध भारत की विदेश नीति में महान राष्ट्रीय आन्दोलन से उत्पन्न हुआ है। विश्व के अधिकांश देशों के साथ भारत के औपचारिक राजनयिक सम्बन्ध हैं। भारत जनसंख्या की दृष्टि से का चीन के बाद दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। दुनिया की सबसे बड़ा लोकतंत्रात्मक शासन व्यवस्था वाला देश भारत को माना जाता है भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। स्वतंत्रता के बाद से ही भारत ने अधिकातर देशों के साथ मैत्रीपूर्ण और सद्भावनापूर्ण संबंधों को बनाए रखा है। 1990 में शीतयुद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद से भारत ने आर्थिक तौर पर भी विश्व की राजनीति को प्रभावित किया है। भारत ने सामरिक तौर पर विश्व पटल पर अपनी शक्ति को बनाए रखा और विश्व शान्ति में वह अपना महत्वपूर्ण योगदान करता आ रहा है। साथ लगते दो पडोसी राज्यों ,पाकिस्तान व चीन के साथ भारत के तनावपूर्ण संबंध अवश्य हैं लेकिन भारत के रूस ,इजरायल और फ्रांस सामरिक एवं रक्षा संबंध स्थापित है। चीन के अंतरराष्ट्रीय राजनीति में बढ़ते प्रभाव के कारण से भारत -अमेरिका के घनिष्ठ संबध हुए है।

Paper Identification

*Corresponding Author

© IJRTS Takshila Foundation, डॉ. महेंद्र सिंह, All Rights Reserved.

भारत की विदेश नीति पृष्ठभूमि

भारत की विदेश नीति के निर्माण का उद्देश्य अपने पड़ोसियों देशों और विश्व के दुसरे राष्ट्रों के साथ शांतिपूर्ण संबंधों को सुनिश्चित करना है जो कि लोकतांत्रिक सिद्धांतों ,समानता, स्वतंत्रता एवं बंधुत्व के पर आधारित है। भारत की विदेश नीति अंतर्राष्ट्रीय मामलों पर अपना स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को सुरक्षित करता है। भारत की विदेश नीति के मूलभूत सिद्धांत में सामाजिक-आर्थिक विकास एवं राजनीतिक स्थिरता ,राष्ट्रीय हितों व राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रोत्साहित करना, विभिन्न देशों के बीच शांति, मित्रता एवं सहयोग को बढ़ावा देना, निरंकुश शक्तियों का प्रतिरोध करना तथा दुसरे देशों के आंतरिक मामलों में विश्व के सर्वाधिक शक्तिशाली देशों द्वारा किये जाने वाले हस्तक्षेप का विरोध आदि करना शामिल है ।

भारत की स्वतंत्रता से पहले ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े नेताओं ने इसमें रुचि लेनी शुरू कर दी थी |भारत के भविष्य का दो ध्यान में रखते हुए उन्होंने इसका निर्माण करना शुरू कर दिया था। 1927 में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ने जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में विदेश नीति विभाग की स्थापना की थी और आज़ादी के बाद पं. नेहरू की विदेश नीति गुटनिरपेक्ष सिद्धांतों पर आधारित थी अर्थात वह भारत को किसी भी विशेष गुट में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र रहने में विश्वास करते थे। 1990 तक भारत की विदेश नीति में कोई परिवर्तन नहीं आया 1977 में जनता दल की सरकार बनने के बाद भी देश की विदेश नीति के मूल सिद्धांत इसी तरह से जारी रहे।

देश की विदेश नीति का एक नया दौर वर्ष 1990 के दशक में आया। 1991 में द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था समाप्त हो गई थी और इस दौर में विश्व एक युगान्तकारी घटना से गुजर रहा था जिसे भूमंडलीकरण व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। सोवियत संघ के विघटन के बाद शक्ति का एक मात्र केन्द्र था अमेरिका क्योंकि दूसरा ध्रुव सोवियत संघ का विघटन हो चूका था। अपनी विदेश नीति में परिवर्तन करते हुए भारत का झुकाव धीरे-धीरे अमेरिका की तरफ होने लगा था । जबकि भारत ने रूस के साथ भी अपने मैत्री और सद्भावनापूर्ण संबंधों को बनाये रखा। प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भारत की विदेश नीति का एक स्वर्णिम युग

माना जाता है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार के समय में भी भारत ने विदेश नीति के क्षेत्र में कई सफलताएँ हासिल कीं। भारत में वर्तमान सरकार की विदेश नीति भी वसुधैव कुटुम्बकम् की धारणा के साथ आगे बढ़ रही है इस सरकार की नीति में पड़ोसी प्रथम और आर्थिक आयाम के पहलू पर ज्यादा महत्त्व दिया गया हैं।

भारत–पाक समबन्ध

भारत और पाकिस्तान के बीच संबंध 1947 में भारत के विभाजन के बाद से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और जातीय एकता के बावजूद अविश्वास और संदेह से घिरे रहे हैं। भारत और पड़ोसी देश अप्किस्तान के बीच कश्मीर संघर्ष विवाद का मुख्य कारण रहा है। पाकिस्तानी कबायली आदिवासियों और अर्धसैनिक बलों के आक्रमण के बाद जम्मू और कश्मीर के हिंदू महाराजा राजा हरि सिंह और उसके मुस्लिम प्रधान मंत्री, शेख अब्दुल्ला ने भारत सरकार के साथ एक विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। इस युद्ध को प्रथम भी कहा जाता है जिसमे भारतीय सेना द्वारा क्षेत्र को हमलावर बलों से सुरक्षित जीता गया था। दिसंबर 1948 में नियंत्रण रेखा के साथ युद्ध समाप्ति के साथ तत्कालीन रियासत को पाकिस्तान और भारत के प्रशासित क्षेत्रों में विभाजित किया गया था। डोगरा साम्राज्य का भारत सरकार के साथ विलय समझौते पर हस्ताक्षर के बाद से पाकिस्तान ने विलय की वैधता को मानने से इनकार करके इसका विरोध करना शुरू कर दिया। 1965 का भारत-पाकिस्तान का दूसरा युद्ध पाकिस्तान के ऑपरेशन जिब्राल्टर की असफ़लता के बाद शुरू हुआ जिसे पकिस्तान ने भारत के शासन के खिलाफ के लिए जम्मू और कश्मीर में घुसपैठ करने के लिए वहां के नागरिको को भड़काया था। । यह युद्ध संयुक्त राष्ट्र के हस्तक्षेप के और ताशकंद घोषणा के जारी होने के बाद में समाप्त हुआ था। भारत और पाकिस्तान में एक बार फी टकराव 1971 में हुआ इस संघर्ष कारण पूर्वी पाकिस्तान रहा था ।जिसके कारण बांग्लादेश का निर्माण हुआ।

1998 में दोनों देशो ने पोखरण में द्वितीय परमाणु परीक्षण किया जिसके कुछ समय के बाद पाकिस्तान ने भी छगई में पहला परमाणु परीक्षण किया। लाहौर घोषणा के बाद फरवरी 1999 में दोनों देशो के संबंधो में सुधार हुआ लेकिन यह ज्यादा समय तक नहीं टिक सका। 1999 में पाकिस्तानी अर्धसैनिक बलों और सेना ने भारतीय के कश्मीर के कारगिल जिले में में घुसपैठ एवं संघर्ष की | 1999 में दिसंबर में इंडियन एयरलाइंस की फ्लाइट 814 के अपहरण में पाकिस्तानी आतंकवादियों के शामिल होने के बाद दोनों के बीच संबंध सबसे निचले स्तर पर पहुंच गए थे। आगरा में आयोजित शिखर सम्मेलन जुलाई 2001 में दोनों देशो के संबंधों को सामान्य करने के प्रयास किये गए परन्तु वे असफल रहे। इसके उपरांत दिसंबर 2001 में भारतीय संसद पर हमला हुआ जिसमें पाकिस्तान का हाथ होना बताया गया था| दोनों देशों के बीच सैन्य गतिरोध बढ़ गया था

जिससे परमाणु युद्ध की आशंका का बढ़ा दिया था। 2003 में शुरू की गई एक शांति प्रक्रिया ने बाद से दोनों देशो के संबंधों में सुधार हुआ है ।

शांति प्रक्रिया स्थापित करने के लिए भारत और पाकिस्तान के बीच कई विश्वास-निर्माण-उपायों को अपनाया गया है। समझौता एक्सप्रेस और दिल्ली-लाहौर बस सेवा दो सफल उपाय हैं जिन्होंने दोनों देशों के बीच लोगों से लोगों के संपर्क को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। 2005 से 2008 के बीच में श्रीनगर-मुजफ्फराबाद बस सेवा एवं नियंत्रण रेखा के पार एक ऐतिहासिक व्यापार मार्ग के उद्घाटन की शुरुआत ने संबंधों को बेहतर बनाने का प्रयास किया। मार्च भारत और पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय व्यापार 2007 में 1.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर था लेकिन यह उम्मीद कि 2010 तक यह 10 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच जायेगा। 2008 के मुंबई हमलों के बाद से दोनों देशों के बीच संबंधों को गंभीर रूप से कमजोर कर दिया।

भारत-पाकिस्तान संबंधों में एक नया अध्याय 2014 के चुनाव में जीत के बाद हुआ नरेंदर मोदी की सरकार ने कार्यभार संभाला और शपथ ग्रहण समारोह में सार्क सदस्यों के नेताओं को आमंत्रित किया। । इसके बाद दोनों देशो के बीच संबंध में सुधार होगा लेकिन 2016 को पाकिस्तानी घुसपैठियों द्वारा भारतीय सेना के शिविर पर हमले किया और जिसके बाद में भारत द्वारा सर्जिकल स्ट्राइक करके दोनों राष्ट्रों के बीच पहले से तनावपूर्ण संबंधों को तनाव पूर्ण बना दिया।

2019 में पाकिस्तानी आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े एक आतंकवादी संगठन ने सीआरपीएफ पर हमले के बाद से इस संबंध को भी अधिक तोड़ दिया। शांति में एक नया अध्याय तब प्रज्वलित हुआ, जब यह अचानक घोषित किया गया कि दोनों पक्षों की सेनाओं के बीच एलओसी के पार सीमा पार से गोलीबारी को रोकने के लिए एक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे और दोनों देशों में एक साथ आने में एक स्थिर वृद्धि देखी गई थी।

<u>भारतीय विदेश नीति के उद्देश्य</u>

हरेक राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए विदेश नीति के उद्देश्य को तय करते हैं। भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों की के अनुरूप विदेश नीति के उद्देश निर्धारित किए हैं जिनका विवरण निम्नलिखित है –

- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति और सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करना।
- अंतर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता की कूटनीति द्वारा निपटाए जाने की नीति को प्रोत्साहित करना ।
- सभी राष्ट्र- राज्य के साथ परस्पर सम्मानपूर्ण संबंध बनाए रखना।
- अंतरराष्ट्रीय कानूनों और विभिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक संबंधों में हुई संधियों के पालन करना।
- गुटनिरपेक्षता को बढ़ावा देना।
- उपनिवेशवादी साम्राज्यवाद का विरोध करना।

भारत-पाक संबंध में बाधाएँ

सर्वविदित है कि पाकिस्तान के साथ भारत का आरम्भ से ही विभिन्न मुद्दों पर विवाद है जिनमे कश्मीर, सियाचिन, सिंधु नदी जल विवाद, कच्छ का रण या सरक्रीक विवाद आदि शामिल है ।मई 2014 में भारत के प्रधानमंत्री ने एक प्रशसनीय कदम उठाते हुए अपने शपथ ग्रहण समारोह में दक्षिण एशिया एसोसिएशन फॉर रीजनल कोऑपरेशन (SAARC) देशों एवं पाकिस्तान के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ सहित सभी नेताओं को आमंत्रित किया। पड़ोसी देशों को अपनी विदेश नीति की प्राथमिकता में रखते हुए भारतीय प्रधानमंत्री ने वर्ष 2015 में लाहौर की यात्रा की पठानकोट हमले और सीमा-पार आतंकवाद को बढ़ावा देने कारण भारत-पाक संबंधों में गतिरोध उत्पन्न हो गया ।जिसके चलते भारत ने 'सर्जिकल स्ट्राइक' और'सार्क सम्मेलन' जिसका आयोजन पाकिस्तान में किया गया था का बहिष्कार किया। चीन-रूस संबंधों की वजह से पाकिस्तान की रूस के साथ भी मैत्री बढ़ रही हैं। चीन-पाकिस्तान-रूस के मैत्रीपूर्ण संबंध भारतीय हित को प्रभावित कर रहे हैं। चीन ने पाकिस्तान के क्षेत्र में न केवल 'ग्वादर पत्तन' का निर्माण किया है बल्कि चीन के 'वन रोड वन बेल्ट' परियोजना के द्वारा 'चीन पाकिस्तान-आर्थिक' गलियारा का निर्माण भी किया जा रहा है, यह गलियारा पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के उस भाग से होकर गुजर रहा है जिसे भारत अपना क्षेत्र मानता है। चीन के द्वारा क्षेत्र में चीनी अधिकारियों और सैनिकों को भी तैनात किया गया है जो भविष्य में भारत की सुरक्षा के लिये गंभीर खतरा साबित हो सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने विदेश नीति में परिवर्तन करते हुए घरेलू व्यापार में वृद्धि , विकास के लिये विदेशी निवेश, व्यापार और प्रौद्योगिकी को हासिल करने केएक साधन के रूप में विदेश नीति का प्रयोग करने के लिये इच्छुक हैं। पाकिस्तान और चीन दो शक्तिशाली परमाणु-शस्त्र संपन्न भारत के पड़ोसी देशों के साथ के संबंध राजनीतिक और सैन्य गतिरोधों के कारण न केवल तनावपूर्ण बल्कि कठिन एवं जटिल हो रहे हैं। वर्तमान परिपेक्ष्य में पाकिस्तान पर ऋण का बोझ एवं भुगतान संतुलन बढ़ता जा रहा है ऐसी स्थिति में भारत पाकिस्तान के पुनर्निर्माण एवं आर्थिक विकास में सहयोगी की भूमिका को अदा कर सकता है।

पाकिस्तान के साथ सम्बन्धो का निर्वाहन : एक कठिन चुनौती

कश्मीर और बांग्लादेश को लेकर आज़ादी के बाद से भारत -पाकिस्तान के बीच तीन युद्ध लड़े गए। दोनों देशो द्वारा 1998 में परमाणु हथियार हासिल करने के बाद से यह कम उग्रता वाले सैन्य टकराव में बदल गया। नियंत्रण रेखा (LOC) और विवादित कश्मीर क्षेत्र पर पाकिस्तान द्वारा हिंसा और गोलीबारी के कारण दोनों देशों में शांति वार्ता को बनाये रखना वर्तमान मोदी सरकार के लिये बहुत चुनौतीपूर्ण काम है। मोदी सरकार ने पाकिस्तान के प्रति भारत के नज़रिए को कड़ा कर दिया है। भारत सरकार ने भारत में पाकिस्तानी उच्चायुक्त

और कश्मीरी अलगाववादी हुर्रियत संगठन के बीच विदेश सचिव स्तर की वार्ता को अगस्त 2014 में रद्द कर दिया था। पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए भारत ने भी जान-बूझकर नियंत्रण रेखा और अंतर्राष्ट्रीय सीमा पर अपने सैनिको को संख्या को बड़ा दिया और सीमा पार से फायरिंग ते भी तेज़ कर दी लेकिन भारत को इससे ज्यदा फायदा नहीं हुआ।

<u>मजबूत कदम उठाने की जरूरत</u>

पाकिस्तान के साथ संबंधो में सुधार के लिए भारतीय प्रधानमंत्री को नागरिक सरकार को मजबूत करने के साथ-साथ पाकिस्तान की सेना से भी जुड़ने की आवश्यकता है ताकि भारत को यह ज्ञात हो सके कि भारत के प्रति पाकिस्तानी सरकार और सेना की क्या मंशा है।

पाकिस्तान का सैनिक प्रशासन भारत के साथ अपनी कटुतापूर्ण की नीति को न तो त्यागना चाहती है और न ही कायरतापूर्ण हमले को रोकने की इच्छुक है| इसलिए सार्थक वार्ता को संभव बनाने के लिए ऐसी दुर्भावनाओं को रोका अति आवश्यक है।

अपने कार्यकाल के दौरान मोदी सरकार ने दोनों देशों के संबंधों को सही दिशा में लाने के लिये हर संभव प्रयास किये हैं। भारत के प्रधानमंत्री ने लाहौर तक की यात्रा की लेकिन पाकिस्तान की भारत के प्रति नीति नकारात्मक व पारंपरिक है और वह इसमें परिवर्तन की इच्छुक भी नहीं है। 2016 में पठानकोट और उड़ी और 2019 में पुलवामा का आतंकी हमला इसका जीता जगता उदहारण है। बम और बंदूक की आवाज़ में बातचीत को आगे अनहि बढाया जा सकता इसलिए प्रधानमंत्री का यह कहना बिलकुल उचित ही है कि आतंकवाद और वार्ता दोनों एक साथ होना संभव नहीं है।

भारतीय विदेश नीति की प्राथमिकता में अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद के मुद्दे को प्रमुखता से रखना रहा है। इन मंचों के माध्यम से पाकिस्तान पर दबाव बनाया गया है जिसका असर विश्व राजनीति में भी देखने को मिला है क्यूँकि आतंकवाद के मुद्दे पर सभी देश भारत के साथ खड़े हैं। जब तक पाकिस्तान आतंकवाद का समर्थन करना नहीं छोड़ेगा तब तक पाकिस्तान और भारत के संबंध में सुधार नहीं सकता है। पाकिस्तान को विश्व समुदाय द्वारा आतंकियों को समर्थन करने के कारण से अलग-थलग होना पड़ा है जिससे कहीं-न-कहीं <u>‘टर्म्स ऑफ़ इंगेजमेंट’</u> में बदलाव आया है | ब्रिक्स सम्मेलन में भी पाकिस्तान आधारित आतंकी संगठनों को लेकर उद्घोषणा की गई थी। तेज़ी से बदलते अन्तराष्ट्रीय राजनीतिक परिदृश्य के साथ भारत की विदेश नीतियाँ भी बदलती रहती हैं। ताकि समय-समय पर स्थितियों में बदलाव कर सर्वाधिक लाभ प्राप्त किया जा सके।

भारत ने वैश्वीकरण दौर में दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय एकीकरण की जरूरत को ध्यान में रखते हुए 'नेबरहुड फर्स्ट नीति' (Neighborhood First Policy) का वर्ष 2005 में शुभारम्भ किया। इस नीति का अर्थ है कि अपने पड़ोसी देशों को प्राथमिकता देना, अर्थात ' अपना पड़ोस पहले है ' (Neighborhood First)।

इस नीति के उदेश्य में सीमा क्षेत्रों का विकास, क्षेत्र की बेहतर कनेक्टिविटी व सांस्कृतिक विकास तथा लोगों के आपसी संपर्क को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित करना आदि शामिल किया गया।

पाकिस्तान की नई सरकार और बदलाव की उम्मीद

पाकिस्तान -भारत के साथ रिश्ते को लेकर आतंकवाद पर कुछ ठोस ज़मीनी क़दम उठाए बिना आगे नहीं बढ़ा सकता है। पाकिस्तान को घोषणाओं की बजाय कुछ कदम उठाने की आवश्यकता है | भारत के ख़िलाफ़ चल रहे जिहाद को बंद करने के लिये पाकिस्तान ने झूठे वादों से आगे बढ़कर कुछ नहीं किया है। भारत के बारे में कोई फ़ैसला लेने की शक्ति पाकिस्तान की नागरिक सरकार के पास नहीं है बल्कि शासन के सरे फैसले लेने का अधिकार तो पाकिस्तान की सेना के पास है। इमरान ख़ान जैसे किसी व्यक्ति के भी पाकिस्तान का प्रधानमंत्री बन जाने भर से भारत के ख़िलाफ़ उनके दिलो में भरी हुई नफ़रत समाप्त नहीं हो सकती है । क्यूँकि पाकिस्तानी सेना धार्मिक चरमपंथी सोच वाली सरकार को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही है जिससे कि भारत के प्रति शत्रुता कम होने के बजाये लगातार बढ़ रहे ।

निष्कर्ष

भारत और पाकिस्तान दोनों देशो के बीच लम्बे समय से चले आ रहे कटु संबंधो ने काफी हद तक भारत के रणनीतिक लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्रभावित किया है | दोनों देशों के बीच निश्चित तौर पर शांति स्थापित करने की आवश्यकता है क्योंकि दोनों देश ही न केवल परमाणु शक्ति संपन्न हैं बल्कि दोनों देशों ने विश्व के शक्तिशाली देशों के साथ अपने अपने संबंधो को भी प्रगाढ किया है |भारत और पाकिस्तान दोनों देशो में व्यापक स्तर पर गरीबी है अतः दोनों देशो को अपनी ऊर्जा और संसाधनों को अपने आर्थिक विकास पर खर्च करना चाहिए रासयनिक हथियारों और बम को खरीदने के बजाय । हथियारो की दौड़ और आपसी प्रति स्पर्धा के कारण इन दोनों देशों के बीच स्थायी शांति या मैत्री का युग नहीं आया और भविष्य में आने की सम्भावना न के बराबर है । भारत पाकिस्तान के साथ संबंधो में सुधार लेन के लिए समग्र और बहुकोणीय रणनीति नीति , नई सोच के साथ कार्य करना होगा और नई नीति के निर्माण की आवश्यकता है । पाकिस्तान को अपनी भूमि में आतंकवादी समर्थित समूहों को पनाह देना बंद करना होगा तथा भारत के साथ द्विपक्षीय संधियों और समझौते का पालन करना चाहिए। यदि पाकिस्तान अतीत की भूलों से सबक लेकर भविष्य में उन भूलो को दोहराने की गलती न करे तो भारत और पाक के मध्य संबंध फिर से स्थापित सुधर सकते हैं |

<u>सन्दर्भ सूची</u>

1. आर एस यादव , (2004) “भारत की विदेश नीति के अंतर्गत ,भारत-पाक सम्बन्ध :नीति एवं निष्पादन,” एक्सेल बुक प्राइवेट लिमिटेड ,नई दिल्ली ,पेज न.87-88
2. डॉ. रोहित भारती (2017), “भारत की पड़ोस नीति : नयी आशायें और दिशायें”,होरिजोंन बुक्स, पेज न.7-8
3. डॉ. एस. पी. सिंघल (1986), “अन्तराष्ट्रीय राजनीति ,” शालीमार पब्लिशिंग हाउस , वाराणसी ,पेज न.110
4. डॉ. एन .के. श्रीवास्तव (1983), “भारत की विदेश नीति ,” साहित्य भवन ,आगरा ,पेज न. 25
5. महेन्द्र कुमार (2013), “अन्तरराष्ट्रीय राजनीति के सैधांतिक परीप्रेक्ष्य, शिवलाल अग्रवाल पब्लिकेशन एण्ड
   कॉरपोरेशन।
6. बी.एल. फडिया (2008) , “अन्तरराष्ट्रीय राजनीति,” साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा|
7. बी.बी.चौधरी (2003-04), “राजनीतिक विज्ञानं एवं अवधारणाये,” श्रीमहावीर बुक कडपो (पब्लिकेशन) दिल्ली ।
8. वी.एन खन्ना और एल.अरोरा (2006), “भारत की विदेश नीति,” नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा.लि.
9. शीला ओझा , भारतीय विदेश नीति का मूल्यांकन , जयपुर , 1992, पेज न. 3
10. एम . एस . राजन , इंडियाज फॉरेन रिलेशंज ड्यूरिंग नेहरू ईरा : सम स्टडीज , नई दिल्ली , 1976
11. माइकेल ब्रेचर , नेहरु : ए पोलिटिकल बायोग्राफी , लंदन , 1959, पेज न. 67
12. आर .एस.यादव , “इंडो सी आई एस रिलेशनज :प्रॉब्लम एंड प्रॉस्पेक्टस,”स्ट्रेटेजिक एनालिसिस,वॉल्यूम16 ,अंक 6 ,पेज न. 936